

सूखा



वह स्थिति जिसके तहत बारिश के माध्यम से पानी की अपर्याप्त आपूर्ति के कारण फसलें परिपक्व नहीं हो पा रही हैं।

या

वह स्थिति जिसमें एक निर्धारित क्षेत्र में फसल पौधों द्वारा वाष्पीकरण और वाष्पीकरण के लिए आवश्यक जल की मात्रा मिट्टी में उपलब्ध नमी की मात्रा से अधिक होती है।

सूखे का वर्गीकरण

सूखे को मोटे तौर पर 3 श्रेणियों में बांटा गया है।

कृषि सूखे के प्रकार

- 1. प्रारंभिक मौसमसूखा:** यह आम तौर पर या तो मानसून की देरी से शुरू होने के कारण होता है या शुरुआत के तुरंत बाद लंबे समय तक शुष्क जादू के कारण होता है, जिसके परिणामस्वरूप अंकुर मृत्यु दर होती है, पुनर्सोईंग या खराब फसल स्टैंड और अंकुर विकास की आवश्यकता होती है।
- 2. मध्य मौसमसूखा:** यह फसल वृद्धि के दौरान लगातार दो वर्षा घटनाओं के बीच अपर्याप्त मिट्टी नमी उपलब्धता के कारण होता है। इसका प्रभाव फसल वृद्धि चरण, वर्षा और सूखे के दौर की तीव्रता पर निर्भर करता है।
- 3. देर से मौसम या टर्मिनलसूखा:** यह मानसून की प्रारंभिक समाप्ति के परिणामस्वरूप होता है, मुख्य रूप से देर से शुरू होने या कमजोर मानसून गतिविधि के साथ वर्षों के दौरान। शुष्क उप-आर्द्र क्षेत्रों में रेनफेड चावल अक्सर सितंबर की बारिश की विफलता के कारण टर्मिनल सूखे के अधीन होता है, जिसमें उस महीने के दौरान 5 दिनों से अधिक के शुष्क मंत्र का 40 से 50% होता है।
- 4. पुरानासूखा:** शुष्क क्षेत्रों में यह आम है जहां अधिकांश वर्षों के दौरान फसली पानी की आवश्यकता को पूरा करने के लिए वर्षा और संग्रहित मिट्टी की नमी अपर्याप्त है। यहां, सुनिश्चित बढ़ती अवधि मुश्किल से 6 से 7 सप्ताह है।
- 5. स्पष्टसूखा:** वर्षा/नमी की उपलब्धता के संबंध में फसल पैटर्न के गलत मिलान के कारण कम से मध्यम वर्षा वाले क्षेत्रों में ये देखे जाते हैं।